अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

डुअर्स की जनजातीय दुनिया में वैचारिक संघर्ष

डॉ0 अभिशेक कुमार, सहायक प्राध्यापक,
स्नातकोत्तर मानवशास्त्र विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर,
इमेलः abhianthro@gmail.com

सारसंक्षेप

डुअर्स एक जनजातीय बाहुल क्षेत्र है, भौगोलिक दृष्टिकोण से हिमालय की सबसे निचली श्रेणी शिवालिक के बाद का उत्तर पूर्वी समतल क्षेत्र डुअर्स के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र को भारतीय एवं भूटान संस्कृति के मिलन का केंद्र स्थल भी कहा जाता है। यहां जीवन के प्रत्येक पहलू में विविधता विद्यमान है भौगोलिक, भाषाई, धार्मिक, प्रजातिय, सांस्कृतिक, आर्थिक विविधताएं सहज ही देखी जा सकती है। यह क्षेत्र चाय बागानों एवं अभ्यारणों के लिए भी प्रसिद्ध है। इस प्रकार डुअर्स विविधता का एक उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करता है। विविधता में एकता भारतीय समाज की एक अनोखी विशेषता है, जो वैश्विक समुदाय को भी आश्चर्यचकित करती है। परंतु इसका यह अर्थ कदापि नहीं की डुअर्स की जनजातीय दुनिया में संघर्ष अनुपस्थित है। इस शोध आलेख में संघर्ष की सैद्धांतिक व्याख्या की गई है, साथ ही डुअर्स क्षेत्र में निवास कर रहे जनजातीय समुदायों के बीच व्याप्त संघर्षों के विभिन्न स्वरूपों का विश्लेषणात्मक विवरण भी प्रस्तुत किया गया है। यह आलेख क्षेत्र कार्य पर आधारित है जो पूर्णता एक अनुभवाश्रित अध्ययन है।

प्रमुख शब्दावलीः संघर्ष, डुअर्स, जनजाति, विविधता, एकता।

परिचय

संघर्ष का मानव से संबंध अतित से ही रहा है, यह मानव संबंधों में सतत रहने वाली एक प्रक्रिया है। हिन्दी शब्दसागर के अनुसार संघर्ष शब्द का अर्थ है– "एक चीज का दूसरी चीज के साथ रगड़ खाना या दो विरोधी व्यक्तियों या दलो आदि में स्वार्थ के विरोध के कारण होने वाली प्रतियोगिता या स्पर्धा" (श्यामसुंदरदास, 1973)। जब व्यक्ति–व्यक्ति के बीच सहयोग संबंध नहीं होता अथवा जब वे एक दूसरे के प्रति तटस्थ भी नहीं होते, तो संघर्ष की परिस्थिति प्रारंभ हो जाती है। संघर्ष को समाज में स्वाभाविक भी कहा जा सकता है, क्योंकि जब लक्ष्य सीमित हो और अनेक व्यक्ति इसे प्राप्त करना चाहे तो संघर्ष स्वाभाविक ही होता है।

अंग्रेजी में संघर्ष का पर्याय है– कॉनफ्लिक्ट, जो कि एक लैटिन शब्द है। यह कॉन और फ्लिगो से मिलकर बना है, जिसमें कॉन का अर्थ साथ से है तथा फ्लिगो का अर्थ टू स्ट्राइक अर्थात टकराना। अतः संघर्ष का अर्थ है–लड़ना, प्रभुत्व के

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

लिए संघर्ष करना, विरोध करना, किसी पर काबू पाना आदि। इसे हम इस प्रकार से व्याख्या भी कर सकते है की, दो वर्गो में या समूहों के बीच सशस्त्र प्रतिरोध ही संघर्ष है। विपरीत सिद्धांतों, कथनो, तर्को आदि से विरोध भी संघर्ष है तथा विचारों, मतों और पसंद के बीच असामंज्यपूर्ण व्यवहार भी संघर्ष ही है। ''संघर्ष वह सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अथवा समूह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विरोधी के प्रति प्रत्यक्ष हिंसा या हिंसा की धमकी का प्रयोग करते है" (गिलीन एंव गिलीन, 1942)। ग्रीन के शब्दो में ''संघर्ष दूसरे या दूसरो के संकल्प के विरोध, प्रतिकार या बलपूर्वक रोकने के लिए जानबूझकर किए गए प्रयत्न को कहते है। ''विचार की भिन्नताओं व समझ के कारण उत्पन्न संघर्ष वैचारिक संघर्ष है। वैचारिक संघर्ष व संघर्ष एक पर्यायवाची के रूप में लिया जा सकता है। वैचारिक संघर्ष या द्वंद से तात्पर्य दो या दो से अधिक समूहों के बीच मतभेद, प्रतिरोध, विरोध आदि से है। यह संघर्ष एक व्यक्ति विशेष या समूह के अंदर भी हो सकता है। इस स्थिति को अन्तः समूह संघर्ष कहा जाता है। ''अन्तर्द्वन्द में इच्छाएँ एक–दूसरे की विरोधी होती है विरोधात्मक प्रकृति होने के कारण दोनो इच्छाओं की तृप्ति एक साथ संभव नहीं है (ब्राउन और मैनिगंर, 1940)"। संघर्ष अपने स्वपनों को प्राप्त करने का भी हो सकता है, यह संघर्ष परिस्थितियों से होता है। यह परस्पर दो विरोधी कार्य–पद्धतियों की संक्रिया है। किंग्सले डेविस ने प्रतिस्पर्धा को ही संघर्ष माना है। अर्थात् प्रतिस्पर्धा व संघर्ष में केवल मात्रा का ही अंतर है। संघर्ष के लिए दो या दो से अधिक व्यक्तियों या समूहों का होना जरूरी है जो एक–दूसरे के हितों को हिंसा, धमकी, आक्रमण, विरोध या उत्पीड़न के माध्यम से चोट पहुँचाने की कोशिश करते है। यह एक चेतन प्रक्रिया है जिसमें संघर्षरत व्यक्तियों या समूहो को एक–दूसरे की गतिविधियों का ध्यान रहता है, वे अपने लक्ष्य की प्राप्ति के साथ–साथ विरोधी को मार्ग से हटाने का प्रयत्न भी करते है। संघर्ष एक वैयक्तिक प्रक्रिया है, इसका तात्पर्य यह है कि संघर्ष में ध्यान लक्ष्य पर केंद्रित न होकर प्रतिद्वन्द्वियों पर केंद्रित हो जाता है। यह एक अनिरंतर प्रक्रिया भी है अर्थात् संघर्ष सदैव नहीं चलता बल्कि एक अंतराल तक चलता है फिर रूकता है फिर पुनः चलता है। कोई भी व्यक्ति या समूह सदैव संघर्षरत नहीं रह सकता है। संघर्ष कि एक प्रमुख विशेषता है कि यह एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है, इसका तात्पर्य है कि यह किसी न किसी रूप में प्रत्येक समाज और प्रत्येक काल में कम या अधिक मात्रा में अवश्य विद्यमान रहा है।

संघर्ष समाज के लिए हमेशा हानिकारक नहीं होता कभी–कभी यह एकता की भावना को समाज में और सुदृढ़ करता है। जब एक समुदाय दूसरे समुदाय से संघर्ष में होता है तो समुदाय की सुदृढ़ता बढ़ती है। संघर्ष का स्वरूप मूलतः परिवर्तन का एक साधन है। परिवर्तन की आवश्यकता और इच्छा को नकारा नहीं जा सकता और यह भी हमें स्वीकार करना होगा कि इन साधनों से ही परिवर्तन संभव है। अतएव संघर्ष सदैव हिंसक के रूप में नहीं होता इसे परिवर्तन के संदर्भ में भी देखा जा सकता है। यह धारणा या विचार मिथ्या है कि, संघर्ष नैतिक रूप से गलत व सामाजिक रूप से अनचाहा है। "समाजों में यद्यपि परिवर्तन अनिवार्य अंतर्निहित होते हैं तथापि परिवर्तन मुख्यतः आंतरिक विरोधों एवं संघर्षों के परिणाम होते हैं" (बॉटमोर, 1968)। यह सदैव विध्वंसात्मक ही नहीं होता, यह समूहों के बीच तनाव को समाप्त भी करता है, जिज्ञासाओं व रूचियों को प्रेरित करता है तथा यह एक ऐसा माध्यम भी हो सकता है जिसके द्वारा समस्याएँ उभारकर उनके समाधान तक पहुंचा जा सकता है। अर्थात् यह व्यक्तिगत और सामाजिक परिवर्तन का एक साधन या आधार भी हो सकता है। संघर्ष का अनिवार्यतः यह अर्थ नहीं है कि यह समुदाय व संबंधों के टूटने का कारण है। कोजर (1956) ने इसकी महत्ता को बताते हुए लिखा है, "संघर्ष असंतुष्टि के

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

स्त्रोतो को खत्म कर तथा परिवर्त्तन की आवश्यकता की पूर्व चेतावनी तथा नवीन सिद्धांतों का परिचय देकर समुदाय पर एक स्थिर एवं प्रभावशाली छाप छोड़ता है"। मूल रूप से संघर्ष की दो स्थितियां है– न्यायोचित लक्ष्य के लिए प्रतिस्पर्धा में शामिल होना एवं ऐसा लक्ष्य जो न्यायोचित नहीं है, उसकी प्राप्ति के लिए प्रतिस्पर्धा में शामिल होना।

उपर्युक्त अर्थ में संघर्ष का तात्पर्य परिणाम की प्राप्ति का साधन है। मानवशास्त्री और समाजशास्त्रीयों का मानना है कि संघर्षविहीन समाज की कल्पना भी नही की जा सकती है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री और जर्मन दार्शनिक मेक्स वेबर का कहना था कि सामाजिक जीवन से हम संघर्ष को अलग नहीं कर सकते। हम जिसे शांति या सद्भावना कहते है, वह और कुछ नहीं अपितु संघर्ष के प्रकार व उद्देश्यों में परिवर्तन है। किसी भी रूप में यह परिस्थिति पूर्ण रूप से अनुपस्थित या उपस्थित नहीं हो सकती। समाज से संघर्ष का पूर्ण विलोपन संभव नहीं है और न ही यह वांछनीय है। इसे बस नियंत्रित या इच्छित दिशा में गतिशील किया जा सकता है, उसे पूर्ण रूप से हटाया नहीं जा सकता। संघर्ष के विषय में विभिन्न विद्वानों के मत व विचार में भिन्नता दिखती है परंतु मानव जीवन मैं यह हमेशा किसी न किसी स्तर पर उपस्थित रही है। कूले (1918) का कहना है कि हमारे संबंधों में सदैव संघर्ष के तत्व का रहना अनिवार्य है। समाज की रचना इस तरह की होती है जिसमें व्यक्तियों व समूहो में विभिन्न स्वार्थ और हित होते है। डुअर्स भी कई समाजों और समुदायो का निवास स्थल रहा है। यहां भाषायी विविधता है, धार्मिक विविधता है एवं प्रजातीय विविधता भी है। प्रत्येक समूह अपने हित की पूर्ति के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संघर्ष करते रहते है। यह आंतरिक एवं बाह्य प्रक्रियाओं के कारण होता है।

संघर्श प्रकार

वैयक्तिक संघर्श

वैयक्तिक संघर्ष उसे कहते है जब संघर्षशील व्यक्तियों में व्यक्तिगत रूप से द्वेष होता है तथा वे अपने हितो को पूरा करने के लिए दूसरो को हानि पहुँचाने के लिए तैयार हो जाते है। इस प्रकार के संघर्ष के पीछे विरोधी के प्रति घृणा, शत्रुता, द्वेष, क्रोध आदि कारण हो सकते है। वैयक्तिक संघर्ष आंतरिक और बाह्य दोनो प्रकार के हो सकते है। जब व्यक्ति का संघर्ष स्वयं से होता है तो यह आंतरिक संघर्ष के रूप को दर्शाता है। उदाहरण के लिए किसी कार्य को करने या न करने का मानसिक द्वंद आंतरिक संघर्ष है। व्यक्ति के अन्तः मन में होने वाले संघर्ष के प्रति मुख्य रूप से तीन कारक होते है जो इस संघर्ष को जन्म देते है। पहला कुण्ठा, द्वितीय स्वार्थपरकता एवं तृतीय हितो का टकराव। व्यक्ति जब स्वयं कोई लक्ष्य निर्धारित करता है और किसी कारणवश या अवरोध से वह लक्ष्य बाधित हो जाता है तो व्यक्ति की वह असफलता कुण्ठा का रूप ले लेती है, और इसके परिणामस्वरूप वह कुछ प्रतिक्रियाएं व्यक्त करता है, जो उसके आंतरिक संघर्ष को प्रदर्शित करती है। व्यक्ति विशेष में आंतरिक संघर्ष उत्पन्न होने के कारणों में प्रमुख कारण उसकी स्वार्थपरकता है। अपने स्वार्थो को पूरा करने के लिए वह उचित–अनुचित एवं वैध–अवैध सभी तरीको का प्रयोग करता है। फलतः व्यक्तिगत ईर्ष्या अततः आंतरिक संघर्ष को जन्म देती है। व्यक्ति कभी–कभी स्वयं के हितो के कारण भी दुविधा में पड़ जाता है। व्यक्ति के पास स्वयं के हित के अनेक विकल्प होते है उनमें से जब उसे एक का चयन करना होता है कि क्या उसके लिए गलत होगा व क्या सही, कौन सा विकल्प

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

अहितकर होगा व कौन सा हितकर, कौन सा जटिल कौन सा सुगम तो यह ऊहापोह व असमंजस की स्थिति संघर्ष पैदा करती है।

वही जब व्यक्ति का संघर्ष जब अन्य व्यक्तियों व समूहो से होता है वह बाह्य संघर्ष कहलाता है। यह भी वास्तविक एवं अवास्तविक रूप में हो सकता है। जब वैचारिक संघर्ष किसी न्यायोचित या न्यायपूर्ण उद्देश्यों को लेकर होते है तथा कानूनी व सामाजिक स्वीकृति को लेकर होते है तो वे वास्वविक संघर्ष कहलाते है। हितों का टकराव व्यक्ति के अहम, सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक आदि कारको द्वारा प्रभावित होता है। परंतु जब यह संघर्ष अनुचित व अन्यायपूर्ण उद्देश्यों को लेकर होते है तो वे अवास्तविक संघर्ष कहलाते है।

अतः यह स्पष्ट है कि वैयक्तिक संघर्ष शीघ्र ही उत्पन्न हो जाते है। इनकी प्रकृति में निरंतरता नहीं रहती, कभी संघर्ष चलता है तो कभी यह समाप्त हो जाता है व पुनः फिर प्रारंभ हो सकता है। जब तक संघर्ष की परिणति सहयोग में न हो जाए यह चलता ही रहता है। ये संघर्ष अत्यधिक कटु नहीं होते है क्योंकि सामाजिक नियम उन्हें किसी न किसी रूप में नियंत्रित रखते है, अतः इस कारण से शारीरिक हिंसा तुलनात्मक रूप से कम होती है।

प्रजातीय संघर्श

जब आनुवांशिक और मोरफोलोजिकल/शारीरिक विशेषताओं के आधार पर व्यक्तियों को वर्गीकृत किया जाता है तो उसे प्रजाति कहते है। यह संघर्ष व्यक्तिगत भी हो सकता है और सामूहिक भी। प्रजातीय संघर्ष का आधार प्रजातीय श्रेष्ठता व हीनता है। श्रेष्ठता व हीनता का मुख्य आधार संस्तरण व उच्चतम एवं निम्नता की भावना होती है। संस्तरण के कारण उच्च स्तर के व्यक्ति को अधिकार प्राप्त हो जाते है तथा वह अधिकारों का प्रयोग जब संस्तरण के निचले स्तर के व्यक्तियों पर करता है या प्रदर्शित किए जाते है तो यह प्रजातीय संघर्ष को परिलक्षित करता है। भौगोलिक परिस्थितियों की विभिन्नता, विशिष्ट शारीरिक लक्षण, जीन संरचना, सांस्कृतिक विभिन्नता आदि ऐसे कई तत्व है जो प्रजाति की उच्चता एवं निम्नता निर्धारण में सहायक होते है। इन तत्वों के परिणामस्वरूप निर्धारित होने वाली प्रजाति की श्रेष्ठता व हीनता में व्यक्ति स्वयं जिम्मेदार नहीं होता है परंतु इन आधारो पर व्यक्ति को ही श्रेष्ठ व हीन दर्शाया जाता है। उदाहरण के लिए अमेरिका में नीग्रो व श्वेत प्रजाति के बीच अक्सर संघर्ष होता है, यह प्रजातीय संघर्ष का सर्वोत्तम उदाहरण है। वर्त्तमान समय में हर प्रजाति अपने को श्रेष्ठ व सुरक्षित बनाए रखना चाहती है, इसलिए इस आधार पर संघर्ष होते रहते है। डुअर्स क्षेत्र में भी इस प्रकार के संघर्ष व्याप्त है जिसे आगे बतलाया गया है।

वर्ग संघर्श

वर्ग संघर्ष का इतिहास समाज में प्रारंभ से ही रहा है। "सामाजिक संरचना में परिवर्तन वर्गों के बीच संघर्ष द्वारा लाए जा सकते हैं, संरचना परिवर्तन के विभिन्न ढंग वर्ग संघर्ष के विभिन्न ढंगो के साथ बदलते रहते हैं" (डहरेनडॉर्फ, 1957)। कार्ल मार्क्स ने लिखा था कि ''आज तक अस्तित्व में रहे समाज का इतिहास, वर्ग संघर्ष का इतिहास है''। प्राचीनकाल में मालिक व दास,

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

मध्यकाल में सामंत व सेवक तथा आधुनिक काल में पूंजीपति व मजदूर आदि वर्ग रहे है। विभिन्न समूहों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में परस्पर भिन्नताएँ पायी जाती है, परिणामस्वरूप उनके जीवन प्रतिमान एक–दूसरे से मेल नहीं खाते व ये कालांतर में विभिन्न वर्गो का रूप ले लेते है। प्रत्येक वर्ग सामाजिक व आर्थिक उपयोगिता की दृष्टि से स्वयं को सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानता है। इस प्रकार की स्थिति उनके बीच विवादो और संघर्ष को जन्म देती है। कार्ल मार्क्स ने कहा है कि ''समाज सदैव दो आर्थिक वर्गो में बंटा रहेगा शोषक व शोषित। ये वर्ग सदैव एक दूसरे के साथ संघर्षरत रहेगें जब तक कि वर्ग विहीन समाज की स्थापना न हो जाए।'' मनोवैज्ञानिक रूप से इस संघर्ष को कभी समाप्त नहीं किया जा सकता है, क्योंकि व्यक्ति विशेष में श्रेष्ठता व हीनता की भावना स्वभावतः होती ही है। वर्ग विहीन समाज का अस्तित्व वर्ग स्वार्थो के कारण व्यावहारिक रूप में कठिन है अतः वर्ग संघर्ष एक सार्वभौमिक प्रघटना है। वर्तमान अध्ययन के आधार पर मेच समुदाय अन्य राभा एवं उरांव से आर्थिक रूप से काफी सुदृढ़ है जो वर्ग संघर्ष का एक उत्तम उदाहरण है।

जातीय संघर्श

जातीय संकीर्णता संघर्ष का एक प्रमुख कारण है। कुछ जातीय समूह पूर्वाग्रहो को पालते है और वे इसे प्रतिष्ठा का विषय मानते है। सामाजिक व्यवस्था में जाति विशेष की श्रेष्ठता व हीनता को मानने की प्रवृत्ति जातीय संघर्ष का कारण बनती है। ऐसे संघर्ष भी संस्तरण की मानसिकता से जुड़े रहते है। भारत में जातीय तनाव अधिक देखने को मिलता है, वही जनजातीय समाज में इस प्रकार के संस्तरण का अभाव होता है।

राश्ट्रीय एवं अंतरराश्ट्रीय संघर्श

जब राष्ट्र की सीमा में संघर्ष हो तो उसे राष्ट्रीय संघर्ष कहते है, जिसका स्वरूप मुख्यतः राजनैतिक होता है। जातिवाद, साम्प्रदायिक तनाव, उग्रवाद, पृथक्करण आदि राष्ट्रीय संघर्ष के प्रमुख कारण बनते है। वही एक राष्ट्र की सीमा पार करके अन्य राष्ट्रो तक संघर्ष का पहुंचना ही अंतरराष्ट्रीय संघर्ष कहलाता है। वैचारिक भिन्नताएं, विस्तारवादी नीतियां, व्यापारिक एवं सीमा विवाद आदि को अंतरराष्ट्रीय संघर्षो के प्रमुख कारण के रूप में देखा जा सकता है।

संघर्श एंव एकता का अंतर्संबंध

डुअर्स के संदर्भ में संघर्ष और एकता का संबंध विशेष महत्व रखता है। यह एक सिक्के के दो पहलुओं के समान ही है। संघर्ष कभी–कभी सामाजिक एकता के बंधन को और मजबूत करता है। साधारणतः हम ग्रामीण समाजों में देखते है कि जब समान वंश के दो परिवारो के बीच मतभेद की स्थिति आती है तो प्रत्येक परिवार के सदस्य एकजूट हो जाते है। परंतु अगर यह मतभेद दो विभिन्न वंशो के बीच हो तो उस समय दो परिवार के संबंध की प्रगाढ़ता बढ़ जाती है। इस प्रकार जब दो ग्रामों के बीच विवाद हो तो प्रत्येक गांव एकजूट हो जाता है, इस प्रकार संघर्ष सामाजिक एकता या कहे सामाजिक बंधनो को मजबूती प्रदान करता है। अर्थात् अगर किसी भी एक इकाई चाहे वह व्यक्ति हो, परिवार या ग्राम पर बाह्य प्रभाव जितना पड़ेगा उसी अनुरूप अन्तः एकता और मजबूत होगी। उदाहरण स्वरूप भारत देश को ही देख सकते है, पड़ोसी देशो द्वारा भारत पर जितना

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

नकारात्मक प्रभाव पड़ता है अथवा मतभेद की स्थिति होती है, उसी अनुरूप भारत की विविधता भी मजबूत होती जाती है। एकीकरण के साथ–साथ संघर्ष की भूमिका भी समाज में है। इस प्रकार हम कह सकते है कि संघर्ष के लिए उत्तरदायी कोई दो कारक पूर्णतः नकारात्मक या पूर्णतः सकारात्मक दृष्टिकोण के हो सकते है परंतु संघर्ष के लिए उत्तरदायी कोई एक कारक एक पक्ष, समाज या समुदाय के लिए नकारात्मक तो दूसरे पक्ष, समाज या समुदाय के लिए सकारात्मक हो सकते है। ''संघर्ष की एकीकृत भूमिका को लगभग हमेशा अनदेखा किया गया है। जबकि संघर्ष कुछ लोगों को विभाजित करने के साथ कुछ अन्य को एकजूट भी करता है (ग्लूकमैन, 1955)।''

सामाजिक विघटन, संघर्श और सामाजिक एकता

जब समाज में सबकुछ संतुलित होता है अर्थात् समाज का प्रत्येक अंग समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए अपने–अपने कर्त्तव्यों का निर्वहण निष्ठापूर्वक और अन्य सदस्यों से तालमेल बनाते हुए करते रहते है एवं ऐसा करने से सभी की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति और समाज की प्रगति संभव होती है, तो उस स्थिति को सामाजिक संगठन कहते है। परंतु जब ऐसा नहीं हो तो सामाजिक विघटन की स्थिति उत्पन्न होती है। सामाजिक विघटन वह अवस्था है जहां सामूहिक जीवन नष्ट हो जाता है तथा व्यक्तियों और समूहो के पारस्परिक घनिष्ट संबंध अस्थिर हो जाते है। ''सामाजिक विघटन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक समूह के सदस्यों के बीच स्थापित संबंध टूट जाते या समाप्त हो जाते है (इलियट और मैरिल, 1961)"। सामाजिक विघटन हमेशा नकारात्मक संघर्ष की स्थिति पैदा करती है जिससे एकता को भी हानी पहुँचती है, या कहे एकता के भंग होने से भी सामाजिक विघटन की स्थिति उत्पन्न होती है। ''जब समूह के एकमत्य और उद्देश्य की एकता भंग हो जाती है, जब सामाजिक संरचना का संतुलन बिगड़ जाता है, और जब समाज का क्रियाशील संबंध व्यवस्थित स्थिति से बाहर चला जाता है, तो इन अवस्थाओं को ही सामाजिक विघटन कहा जाता है (निऊमेयर, 1953)''। इस प्रकार हम कह सकते है कि एकता, संघर्ष और सामाजिक विघटन सभी एक दूसरे पर प्रभाव डालते है।

डुअर्स

भारत देश के उत्तरी–पूर्वी में भूटान और भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों को डुअर्स शब्द द्वारा संबोधित किया जाता है। डुअर्स एक तिब्बतो वर्मीज शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है *दरवाजा,* यह अंग्रेजी के *डोर* शब्द से संबंधित है। अर्थात् हम कह सकते है कि डुअर्स, भारत एवं भूटान संस्कृति के मिलन का केंद्र स्थल है। कुल मिलाकर इस क्षेत्र में 18 दर्रे हैं, जिसके द्वारा संपर्क स्थापित किया जाता है। कुल 18 दर्रो में 11 बंगाल में तथा शेष 7 दर्रे असम क्षेत्र में आते हैं। "*डालिमकोट, चममुर्ची, जूमेरकोट, मायनागुड़ी, लक्खी, भुलका, बक्सा, गोम्मार, रिप्पों, बाघ और* सिडली बंगाल में आते है। वही *बुड़ीगुम्माह, कालिंग, शुरकोल्ला, चम्पागुड़ी, बांस्का, चपकाम्हा और बिंजी* असम के भौगोलिक क्षेत्र में आते है (देवनाथ, 2010)"। यह वृहत हिमालय का सबसे निचला भाग है, या कह सकते है शिवालिक श्रेणी के बाद का उत्तर–पूर्वी समतल भौगोलिक क्षेत्र। यह क्षेत्र मुख्यतः दो भागों में विभाजित है पूर्वी एवं पश्चिमी डुअर्स, इसका विभाजन संकोष नदी के आधार पर किया जाता है। जिसमें पश्चिमी डुअर्स को बंगाल डुअर्स तथा पूर्वी डुअर्स को असम डुअर्स भी कहा जाता है। संपूर्ण डुअर्स क्षेत्र का विस्तार 880 वर्ग कि0मी0

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

(340 वर्ग मील) का है। यह संपूर्ण भाग जलोढ़ बाढ़ द्वारा निर्मित है, जहां सवाना घास के मैदानों की प्रमुखता है। यह चाय बगानों एवं वन्य अभ्यरणों के लिए भी प्रसिद्ध है। उत्तर में भूटान, दक्षिण में बांग्लादेश (ब्रह्मपुत्र बेसिन), पश्चिम में बंगाल एवं पूर्वी में असम राज्य इसकी सीमा बनाते है।

डुअर्स की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार *3T* है, अर्थात् *टिंबर, टूरिस्ट एवं टि*। अच्छी किस्म के वनस्पति के कारण यह क्षेत्र टिंबर उद्योग के लिए अनुकूल है। यहां की आय का यह एक मुख्य स्त्रोत भी हैं, इस उद्योग से इस क्षेत्र में निवास कर रहे लोगों को रोजगार भी मिलता है, वही यह क्षेत्र चाय बगानों के लिए भी काफी प्रसिद्ध है, तथा वृहत संख्या में यह रोजगार उपलब्ध कराने का साधन भी है। छोटानागपुर क्षेत्र से काफी अधिक संख्या में लोग यहां के चाय बगानों में श्रमिक के रूप में कार्य करते है। वही मनोरम छटाओं, दृश्यों तथा मनमोहक मौसम के कारण यह क्षेत्र पर्यटको के लिए आकर्षक का केंद्र रहता है। वन्य अभ्यरणों में जंगल सफारी के लिए यह क्षेत्र विशेष रूप से प्रसिद्ध है। चाय बगानों को देखने के लिए भी दूर–दूर से सेनानियों का वर्षभर आना–जाना लगा रहता है। पहाड़ों, पर्वतों, नदियों, जंगलों से घिरा यह प्रदेश पर्यटको के शांत मन चिंतन के लिए सुप्रसिद्ध है। अर्थात् टिंबर, चाय उद्योग एवं पर्यटन यहां के अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। अर्थोपार्जन या कहे आय स्त्रोतों का मुख्य आधार इन्ही उद्योगों के इर्द–गिर्द ही घुमता है।

डुअर्स एक जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र है, जहाँ कई समुदाय निवास करते है। भारत के सभी भाषा परिवार इस क्षेत्र से संबंध रखते है। *ऑस्ट्रो एशियाटिक* भाषा परिवार के अंतर्गत *मुंडारी, हो, खड़िया, संथाली* इत्यादि भाषाएँ है वही *द्रविड़ियन* भाषा परिवार की *कुरूख* भाषा जो *उरांवों* द्वारा बोली जाती है। साथ ही तिब्बतो वर्मीज भाषा परिवार के अंतर्गत *राभा* जनजाति की *कोचक्रो, मेच की मेचिया, टोटो तथा लेप्चा* की भाषा को रखा जा सकता है। इस क्षेत्र की सबसे प्रमुख संपर्क भाषा *नागपुरी या सादरी* को हम *इंडो आर्यन* भाषा परिवार के अंतर्गत रख सकते है। डुअर्स के जनजातीय समूहो को अगर हम शारीरिक सरंचना एवं भाषा परिवार के अंतर्गत वर्गीकृत कर देखे तो यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि डुअर्स एक छोटा भारत है अर्थात् *मिनी इंडिया* । इसके अलावा कई संस्कृतियों, धर्मो का यह केन्द्र स्थल भी रहा है। उपरोक्त विवरण डुअर्स की विविधता का उत्तम चित्रण करता है।

डुअर्स में संघर्श के प्रमुख कारक

डुअर्स की जनजातीय दुनिया में एकता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाले कुछ महत्वपूर्ण कारको की चर्चा यहां विभिन्न उपशीर्षकों में की गई है। पिछले एक दशक से डुअर्स की जनजातियां कुछ गंभीर खतरो से गुजर रही हैं। समाज में उत्पन्न कुछ वैचारिक संघर्ष ने एकता, शांति, सद्भाव और भाईचारे की भावना को विघटित करने का भी प्रयास किया हैं। डुअर्स में एकता और विस्तार के विघटन के लिए कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार हैः–

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

राजनैतिक–प्रशासनिक कारण से अंतर–जनजातीय वैचारिक संघर्श

पिछले एक दशक में या कहे स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् डुअर्स क्षेत्र में अंतर–जनजातीय वैचारिक मतभेद एक गंभीर खतरा या कहे समस्या बन चुकी है, जो एकता को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही है। "राजनीतिक शक्ति एक वर्ग की संगठित शक्ति है जिसका उद्देश्य दूसरे वर्ग का शोषण करना होता है" (रेमंड एरोन, 1968)। वर्त्तमान समय में विभिन्न राजनीतिक दलों ने जनजातीय जनसंख्या को कई वर्गो में विभाजित करने का प्रयास किया है। विभिन्न राजनीतिक दल अपने वोट बैंक के लिए उन्हें अपने अनुसार संबोधित करते हैं। इस वोट बैंक के उद्देश्य के कारण उन्होंने समुदायो के बीच विभेद उत्पन्न कर दिया है। वर्त्तमान में डुअर्स की जनजातीय जनसंख्या तीन वर्गो में राजनीतिक दलों द्वारा विभाजित हैः–

(क) नेपाली वर्ग

(ख) भूमि पुत्र वर्ग

(ग) छोटानागपुर प्रवासित चाय श्रमिक वर्ग

नेपाली वर्ग के अंतर्गत उन समुदायों को रखा गया है जो नेपाल क्षेत्रों से प्रवासित होकर डुअर्स क्षेत्र में आए। इनकी ज्यादातर संख्या चाय बगानों में श्रमिक के रूप में कार्य करती है। *छेत्री, बहादुर, थापा, राय, तमांग, नेवार, कामी* आदि समुदाय इस वर्ग के अंतर्गत आते है।

भूमि पुत्र वर्ग के अंतर्गत *राभा, मेच, लिंबू, टोटो, राजवंशी, कोच* आदि समुदायों को रखा गया है। इन समुदायों की उत्पति भूमि डुअर्स का क्षेत्र ही रही है अर्थात् ये वर्ग प्रवासित समूह नहीं है। जनजातीय वर्गो में सबसे ज्यादा भूमि स्वामित्व इस वर्ग के पास है। आर्थिक रूप से सबसे संपन्न जनजातीय वर्गो में इसी वर्ग समूह के समुदाय आते है। सामान्यतः मेरे अवलोकन के आधार पर मेच समुदाय डुअर्स की एक डोमिनेंट या प्रभावी जनजाति वर्ग है।

वही नाम से ही प्रतित होता है कि छोटानागपुर (वर्त्तमान झारखंड व उड़िसा, छत्तीसगढ़ के कुछ क्षेत्र) क्षेत्र से प्रवासित चाय श्रमिक अर्थात् अंग्रेजो द्वारा चाय बगानों में कार्य हेतु बड़ी संख्या में छोटाानागपुर क्षेत्र से इन क्षेत्रो में जनजातीय वर्गो को बसाया गया इन्हें इस वर्ग में रखा जाता है। *उरांव, मुंडा, खड़िया, हो, चिक बड़ाईक, महली, लोहरा* जनजातीय समुदाय इस वर्ग के अंतर्गत आते है। जनसंख्या की दृष्टिकोण इनकी एक बड़ी संख्या इन क्षेत्रों में निवास करती है। मुख्यतः चाय श्रमिको के रूप में तथा टिंबर उद्योगो में ये समुदाय संलग्न है। उपरोक्त छोटानागपुर श्रमिक वर्ग में संख्यात्मक रूप से उरांव समुदाय प्रभावशाली भूमिका में है।

उपरोक्त तीनो समुहो या वर्गो को श्रेष्ठता के मामले में, सरकारी लाभ पाने के लिए, आरक्षण पाने, स्वायत्तता और शक्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से आपस में संघर्षशील रहे है, जो अंततः पारस्परिक संबंधो को कमजोर करती है जिससे एकता की भावना को ठेस पहुँचती है। वर्त्तमान में पहाड़ी क्षेत्र के लोग आत्म स्वायत्तता की मांग कर रहे हैं और अलग राज्य गोरखालैंड की मांग के लिए आंदोलन भी कर रहे है। इस आंदोलन में डुअर्स के नेपाली और आदिवासी वर्ग भी भाग ले रहे है और डुअर्स

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

में भी विरोध प्रदर्शन कर रहे है। इसके कारण डुअर्स भूमि पुत्र वर्ग के साथ अन्य आदिवासी समूह व नेपाली समूह के बीच तनाव की स्थिति उत्पन्न हुई है। इस जनजातीय संघर्ष के लिए कुछ राजनीतिक दलों का समर्थन भी प्राप्त होता है जो डुअर्स की एकता और भाईचारे की भावना को राजनीतिक वोट बैंक के उद्देश्य के कारण नुकसान पहुँचाते है।

आज के दिनों में बोड़ो खंड के मंगोलियाई जनजाति समूह जैसे राभा, मेच और छोटानागपुर की चाय प्रवासी जनजातीय समूहो के बीच में वैचारिक संघर्ष को आसानी से देखा जा सकता है। मेच और राभा जनजाति वर्ग खुद को छोटाानागपुर के प्रवासी जनजाति समुदाय जैसे उरांव से खुद को श्रेष्ठ मानते है। ये स्वयं को इन समुदायो से ऊँचा समझते है और गौरवान्वित महसूस करते है। बोड़ो अनुभाग जनजातियों का दावा है कि वे *भूमि पुत्र* (डुअर्स की मिट्टी के पुत्र) हैं, जबकि चाय श्रमिक वर्ग छोटानागपुर से यहां आकर बसे है। बोड़ो वर्ग छोटानागपुर प्रवासीत जनजाति समुदाय को *आदिवासी या काली जनजाति* के रूप में भी संबोधित करती है, जो की श्वेत और अश्वेत की भावना को दर्शाता है। पदानुक्रम के हिसाब से बोड़ो वर्ग खुद को श्रेष्ठ मानते है या इसका दावा करते है। डुअर्स में श्वेत और अश्वेत का विभेद प्रजातीय संघर्ष को परिलक्षित करता है। विभिन्न राजनीतिक दल अपने निजी स्वार्थ को पुरा करने के उद्देश्य से या राजनीतिक लाभ के उद्देश्य से भी इस प्रकार के विभेद को बढ़ावा देते है जो अंततः एकता की भावना को कमजोर करती है।

पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा आरक्षण के लाभ में असमानता भी डुअर्स के जनजातीय दुनिया में जनजातीय संघर्ष का एक प्रमुख कारण रही है। वर्त्तमान समय में भी सभी चाय प्रवासी जनजाति को अनुसूचित जनजाति की सूची में शामिल नहीं किया गया है, क्योंकि वे छोटानागपुर क्षेत्र से आए हुए है। वही बोड़ो भाग के सभी जनजातीय समुहों को पश्चिम बंगाल की सरकार ने अनुसूचित जनजाति की सूची में रखा है। इसके कारण छोटानागपुर प्रवासी वर्ग आज भी इसकी मांग को लेकर डुअर्स क्षेत्र में प्रयत्नशील हैं। आरक्षण का लाभ न मिलने के कारण वे कई सरकारी सुविधाओं से भी वंचित हो जाते है। वंचना की यह अनुभूति पुनः डुअर्स क्षेत्र की जनजातियों के बीच वैचारिक संघर्ष का कारण बनती है।

डुअर्स क्षेत्र में छोटानागपुर के प्रवासी चाय श्रमिक के पास स्वामित्व भूमि का अभाव है, क्योंकि चाय बगानों की तरफ से ही इन्हें रहने के लिए आवास मुहैया करायी जाती है। अर्थात् जो श्रमिक जिस चाय बगान में कार्य करते है वही के क्वार्टर में रहते है। परंतु सरकार द्वारा ऐसी कई योजनाएं है मुख्यतः आवास निर्माण संबंधी योजना जिसमें लाभुक के पास भूमि का स्वामित्व होना एक अनिवार्य शर्त होती है। कई पीढीयों से क्वार्टर में रहते आए ये श्रमिक संख्यात्मक रूप में विस्तारित तो हुए है परंतु आवास की संख्या सीमित ही रही है। चाय बगानो में रहने के कारण निजी भूमि भी इन्हे इन क्षेत्रो में प्राप्त नहीं हुई है। उपरोक्त कारणो से ये सरकार की कई योजनाओं से वंचित हो जाते है। इस कारण से भूस्वामित्व वाले समुदायो से संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यह सरकार की चाय श्रमिको के प्रति उदासीनता को भी दर्शाता है, वही संघर्ष की भावना को भी जन्म देता है।

वर्त्तमान समय में क्षेत्र कार्य के दौरान साक्षात्कार द्वारा यह पता चला कि डुअर्स में पश्चिम क्षेत्र के समुदाय एक अलग केंद्रशासित प्रदेश *कूचबिहार* की मांग कर रहे है। राजनीतिक एवं प्रशासनिक उद्देश्य से इस मांग को केंद्र सरकार के समक्ष भी

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

रखा गया है। डुअर्स क्षेत्र के कुछ जनजातीय समुदाय भी इस मांग का समर्थन कर रहे है। इस कारण से कई बार रेलवे एवं सड़क परिवहन में बाधा भी पहुँचाते है। इस प्रकार उपरोक्त सभी कारणों से राजनीतिक प्रशासनिक द्वारा एकता पर लगातार नकारात्मक प्रहार पड़ता रहता है, जो एकता की भावना को कमजोर करने का प्रयास भी करता है।

पिछले एक दशक में चाय बगान श्रमिको की सक्रियता वामपंथी दलो में बढी है, वही कुछ नेपाली और गोरखा युवा भी इस क्षेत्र में आंदोलन से जुड़े हुए है। वर्त्तमान में ये वामपंथी पार्टी में शामिल होकर समानांतर सरकार चला रहे है। डुअर्स के बोड़ो लड़के भी उल्फा से जुड़े हुए है, जो वामपंथी पार्टी है। डुअर्स क्षेत्र में विकास के लिए सरकारी उदासीनता के कारण, स्वायत्ता की मांग एवं अधिकारो को प्राप्त करने के उद्देश्य से कुछ युवा इन संगठनों से जुड़ गए है। वन अधिकार से वंचना के कारण भी वनवासी राभा के कुछ युवा लड़के इन संस्थाओं से जुड़कर अपनी मांग को सरकार के समक्ष रखते आए है। बेरोजगारी भी एक मुख्य कारण है, जिससे युवा वर्ग संघर्ष की ओर अग्रसर हो रहे है। इसके अलावा डुअर्स को पांचवी अनुसूची के अंतर्गत शामिल करने के लिए भी इस प्रकार की मांग लगातार स्थानीय समुदायों द्वारा समय–समय पर किए जा रहे है। इस कारण भी वर्ग संघर्ष की स्थिति इस क्षेत्र में उत्पन्न हो चुकी है।

बाह्य लोगों, व्यापारियों, बिचौलियों और पर्यटको का हस्तक्षेप

डुअर्स क्षेत्र में बाहरी लोगों जैसे व्यापारियों, बिचौलियों एवं पर्यटकों के हस्तक्षेप के कारण भी संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई है। ये वर्ग अपने स्वार्थ के लिए या कहे लाभ के उद्देश्य के लिए जनजातीय समुदाय के सहज एवं सरल स्वभाव का फायदा उठाते है। अपने स्वार्थो को पूरा करने के लिए बिचौलिए उन्हें मनाते रहते है। अच्छी व आकर्षक दुनिया दिखा कर ये जनजातीय समूहों की आउटसोर्सिंग भी करते है। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए ये आपसी जनजाति वर्गो में मतभेद या फूट लाने का भी कार्य करते है, जो अंततः वैचारिक संघर्ष को जन्म देता है। वही दूसरी ओर पर्यटक समूह के प्रभाव से डुअर्स के जनजातीय समुदाय धीरे–धीरे नवीन प्रौद्योगिकी से जुड़ रहे जो अंततः दो व्यक्ति या समुदायों के बीच सामाजिक दूरी को बढ़ावा देता है। इन कारणो से सामाजिक संबंधो में अलगाव की स्थिति उत्पन्न होती है, जो एकता की भावना को कमजोर करती है। इन प्रभावों के कारण ये समुदाय अपनी पारंपरिक संस्कृति एवं परंपराओं से दूर होते जा रहे है, जिससे सांस्कृतिक मूल्यों का क्रमिक पतन भी हो रहा है, जिस कारण से संघर्ष की भावना अंतः जनजातीय के मध्य बढ़ी है।

जंगल अधिकार प्राप्ति हेतु संघर्श

पूर्व में डुअर्स के वनवासी जनजातियों का उनके जंगलों पर पूर्ण अधिकार प्राप्त था और वे वन–सम्पत्तियों का उपभोग बिना किसी प्रतिबंध के करती थी। लघु वन उपज, जंगली वस्तुओं, पशु, वृक्ष आदि सभी के वे मालिक थे। परंतु वर्त्तमान में परिस्थिति बिल्कुल विपरीत है। अब परिस्थिति बिल्कुल विपरीत है, वर्त्तमान में वन पर सरकार का पूर्ण नियंत्रण है। सरकार जंगल माफिया एवं ठेकेदारो के सहयोग से लकड़ी निकालने आदि का काम कर रही है। ये ठेकेदार सरल स्वभाव के जनजातियों की अज्ञानता का लाभ उठाकर खूब शोषण करते है। इस कारण से भी डुअर्स जनजातीय समुदायों में आक्रोश पनपा है, जो संघर्ष की दिशा की ओर बढ़ता जा रहा है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

भू–स्वामित्व की मांग और वनवासी ग्राम

डुअर्स क्षेत्र में ग्राम दो स्वरुपो में विभक्त है प्रथम राजस्व ग्राम द्वितीय वनवासी ग्राम, मेरे अध्ययन क्षेत्र में उदाहरण स्वरूप जहां पश्चिम सताली ग्राम एक राजस्व ग्राम है तथा कोदालबस्ती एक वनवासी ग्राम है। कोदालबस्ती ग्राम वन विभाग के अंतर्गत आता है। यहां कई वर्षो से राभा और उरांव समुदाय साथ–साथ रहते आए है। उन्होंने जंगल की जमीन को साफ कर कृषि योग्य भूमि एवं घरो का निर्माण किया। परंतु वर्त्तमान में भी इन समुदाय को अपनी भूमि पर पूर्ण अधिकार प्राप्त नहीं हुआ है। वही वर्त्तमान में ये जंगल को काटकर या साफ कर नई भूमि का निर्माण भी नहीं कर सकते है। भू–स्वामित्व की लगातार मांग के पश्चात् इन्हें बस भूमि का पट्टा प्राप्त हुआ है जो की अभी भी इन्हें भूमि पर पूर्ण अधिकार प्रदान नहीं करता। इस कारणवश भी संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई है।

निष्कर्ष

उपरोक्त वर्णित सभी कारकों ने डुअर्स क्षेत्र की जनजातीय दुनिया में व्याप्त एकता को प्रभावित करने का प्रयास किया है। इन कारणों से सामाजिक अलगाव की स्थिति भी उत्पन्न हुई है। संघर्ष से सामूहिक जीवन को नुकसान पहुँचता है तथा व्यक्तियों और समूहो के पारस्परिक घनिष्ट संबंध अस्थिर और विकृत हो जाते है। इससे सामाजिक संरचना का व्यवस्थित रूप बिगड़ जाता है। परंतु यह बस संघर्ष का एक पहलू है। दूसरी ओर संघर्ष अन्य वर्ग को सुदृढ भी करता है एवं सकारात्मक परिवर्त्तन भी लाता है। उपरोक्त समस्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संघर्ष या वैचारिक संघर्ष अनेक स्वरूपों में दृष्टिगोचर होता है। वैयक्तिक संघर्ष से प्रारंभ होकर संघर्ष, प्रजातीय व वर्ग संघर्ष की सीढ़ियां चढ़ते–चढ़ते जातीय व जनजातीय संघर्ष में परिवर्तित होता है, और अंततः संघर्ष के विभिन्न रूप राजनैतिक स्तर के राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय संघर्ष में परिवर्तित हो जाता है। यह स्पष्ट है कि एकता का अर्थ संघर्ष की अनुपस्थिति नहीं है। एकता के बारे में एक गलत धारणा व्यापक रूप से प्रचलित है कि, एकता का अर्थ समरूपता या समानता है। एकता समरूपता से भी ज्यादा मायने रखता है, जो संघर्ष के साथ समाज में रहकर सामाजिक संरचना को मजबूत करता है। इस प्रकार संघर्ष मानवीय संपर्क के प्रत्येक क्षेत्र में अनेक तरीकों एवं विभिन्न मात्राओं में अभिव्यक्त होता है तथा इसके प्रकार विभिन्न सांस्कृतिक स्थितियों के साथ बदलते रहते हैं। अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि संघर्ष मानव जीवन में एक सार्वभौमिक तत्व या घटना है। यह व्यक्ति व समाज के जीवन से जुड़ा हुआ यथार्थ है जिसकी अभिव्यक्ति भिन्न समुदायों में भिन्न होती है। डुअर्स की जनजातीय दुनिया भी इस संघर्ष से अछूती नहीं रही है।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

संदर्भ सूची

एरोन, रेमंड (1968). मेन करेंट्स इन सोशियोलॉजिकल थॉट, डबलडे कंपनी, गार्डन सिटी.

बसुमाता, यू0 (2001). अबाउट द ओरिजिन ऑफ द जेनेरिक टर्म 'मेच'. इन पी0 बरगारय् (संपा0), *अलौयखुंगरी सोविनियर ऑफ बोड़ो साहित्य सभा* (पृ0 सं0 41–45). कलकत्ता.

ब्राउन, जे0 एफ0 और मैनिंगर, के0 ए0 (1940). द साइकोडायनेमिक्स ऑफ अबनॉर्मल बिहेवियर न्यूयॉर्क, मैकग्रा हिल बुक कंपनी.

बॉटमोर, टीवी (1968). श्मार्क्सिस्ट सोशियोलॉजीश्इन द इंटरनेशनल एनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ द सोशल साइंसेज,वॉल्यूम 10, एड. डेविड एल सील्स,मैकमिलन कंपनी,न्यूयॉर्क.

भौमिक, एस० (1980). क्लास फॉरमेशन इन द प्लांटेशन सिस्टम. नई दिल्ली, पिपल्स पब्लिसिंग हाउस.

चट्टोपाध्याय, बी० (2015). इंट्रोगेटिंग यूनिटी इन डायवर्सिटीः वॉयसेस फ्रॉम इंडियाज एनसिएण्ट टेक्सट. सोशल साइंसटिस्ट, 43(9 / 10), 3–28.

कॉनेल, जे0, दासगुप्ता, बी0, लेस्ली, आर0 और लिप्टन, एम0 (1976). माइग्रेशन फ्रॉम रूरल एरियाः द इविडेंस फ्रॉम विलेज स्टडीज. दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

दासगुप्ता, पी0 के0 और खान, आई0 ए0 (1983). इंपैक्ट ऑफ टी प्लांटेशन इंडस्ट्री ऑन द लाइफ ऑफ ट्राइबल लेवरर्स. कलकत्ता, एंथ्रोपॉलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया.

दास, ए0 के0 एवं साहा, आर0 एन0 (1991). वेस्ट बंगाल ट्राइब्स : सोशियो–इकोनॉमिक एंड कल्चरल लाइफ. गवर्ननेंट ऑफ वेस्ट बंगाल, बुलेटिन ऑफ द कल्चरल रिसर्च इंस्टीच्यूट, एस0 सी0 एंड एस0 टी0 वेलफेयर डिपार्टमेंट.

डहरेनडॉर्फ, राल्फ (1957). क्लास एंड क्लास कनफ्लिक्ट इन इंडस्ट्रियल सोसायटी लंदन रूटलेज एंड कीगेन पॉल

देवनाथ, एस0 (2010). द डुअर्स इन हिस्टोरिकल ट्रांजिशन. वेस्ट बंगाल, एन0 एल0 पब्लिशर्स.

दूबे, एस0 एम0 (संपा0). (1978). नॉर्थ ईस्ट इंडियाः ए *सोशियो लॉजिकल* स्टडी. दिल्ली, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी.

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

इलियट, एम0 ए0 और मैरिल, एफ0 ई0 (1961). सोशल डिसआर्गेनाईजेशन. न्यूयॉर्क, हार्पर एंड ब्रोस.

गिन्सबर्ग, एम0 (1958). सोशल चेंज. द ब्रिटिश जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी, 9 (3), 205–229.

ग्लूकमैन, एम0 (1955). क्सटम एंड कनफ्लिक्ट इन अफ्रीका. ऑक्सफोर्ड, बेसिक ब्लैकवेल.

गौर, एम0 एस0 (2002). यूनिटि इन डाइवर्सिटि. जयपुर, रावत पब्लिकेशन्स.

गोटलोब, एम० (2007). इंडिया यूनिटी इन डायवर्सिटी एज अ क्वेश्चन ऑफ हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव. *इकोनॉमिक एण्ड पॉलीटिकल वीकली*, 42 (9), 779–789. रिट्रइवड फ्रॉम www.jstor.org/stable/4419309

गिसबर्ट, पी0 (1973). फंडामेंटल ऑफ सोशियोलॉजी. कलकत्ता, ओरियंट लोंगमैन प्राइवेट लिमिटेड

हॉबल, ई0 ए0 (1954). द लॉ ऑफ प्रिमिटिव मैनः ए स्टडी इन कंपैरेटिव लीगल डायनामिक्स. हार्वर्ड, हार्वर्ड युनिवर्सिटी प्रेस.

खरे, पी0 के0 (1991). सोशल चेंज ऑफ इंडियन ट्राइब्सः इंपैक्ट ऑफ प्लानिंग एंड इकोनोमिक डेवलपमेंट. नई दिल्ली, दीप एंड दीप पब्लिकेशन.

कोजर, एल0 ए0 (1956). द फंक्शन ऑफ सोशल कोनफ्लिक्ट न्यूयॉर्क, द फ्री प्रेस.

कुरूप, ए0 एम0 (1986). कंटिन्यूटी एंड चेंज इन ए लिटिल कम्युनिटी. नई दिल्ली, कोनसेप्ट पब्लिकेशन.

कुमार, एम0 (2007). जनजातीय समाज में शिक्षा और आधुनिकीकरण. नई दिल्ली, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी.

कुमार, एम0 (2009). आदिवासी संस्कृति एवं राजनीति. नई दिल्ली, विश्वभारती पब्लिकेशन.

कूले, सी0 एच0 (1918). सोशल प्रोसेस, न्यूयॉर्क.

मित्तल, ए0 सी0 और शर्मा, जे0 बी0 (1998). ट्राईबल मूवमेंट पॉलिटिक्स एंड रिलिजन इन इंडिया. नई दिल्ली, राधा पब्लिकेशन.

मिंज, डी० (2010). मुण्डा एवं उरांव का धार्मिक इतिहास. नई दिल्ली, कल्पज पब्लिकेशन.

निऊमेयर, एम0 (1953). सोशल प्रॉब्लम्स एंड द चेंजिंग सोसायटी. न्यूयॉर्क, डी0 वॉन नोस्ट्रेंड कॉरपोरेशन.

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

शर्मा, बी०डी० (2000). द फिफ्थ शेड्यूल (वोल्यूम–I). नई दिल्ली, सहयोग पुस्तक ट्रस्ट.

सिंह, आर0 (1956).. द यूनिटी ऑफ एन इंडियन विलेज. *द जरनल ऑफ एशियन स्टडीज,* 16(1), 10–19.

सेठ, वी0 एन0 (1960). ए नोट ऑन द यूनिटी ऑफ इंडिय. *सोशियोलॉजिकल बुलेटिन,* 9(1), 39–45.

शर्मा, बी0 (1997). आदिवासी स्वशासन. नई दिल्ली, प्रकाशन संस्थान.

श्यामसुंदरदास (मूल संपादक) (1973). हिंदी शब्दसागर. वाराणसी. नागरी म्रुदरा.

उप्रेती, एच0 (2000). भारतीय जनजातियाँः सरंचना एवं विकास. जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी.

विद्यार्थी, एल0 पी0 (संपा0) (1969). कॉनफ्लिक्ट, टेंशन एंड कल्चर ट्रेड इन इंडिया. कलकत्ता, पुंथी पुस्तक.

विद्यार्थी, एल0 पी0 और राय, बी0 के० (1976). ट्राइबल कल्चर ऑफ इंडिया. नई दिल्ली, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी.

विश्वास, आर० (संपा0). (2001). उत्तरबंगेर जाति–व–उपजाति (बांग्ला में). कलकत्ता, पुनाश्च.